بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Mob.9682536974,E-Mail :ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-25.03.2022 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

मसीह मौऊद दिवस के संदर्भ में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के शुभ जीवन परिचय के विषय में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. के द्वारा वर्णित कुछ घटनाओं का मनमोहक वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 25 मार्च 2022, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद, टिलफ़ोर्ड यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم ۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

दो दिन पहले 23 मार्च का दिन था, यह दिन जमाअत में यौमे मसीह मौऊद के रूप में मनाया जाता है। उस दिन हज़रत मसोह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पहली बैअत ली थी, इस दिन जलसों का आयोजन भी होता है जिनमें आप अलैहिस्सलाम के दावे, आप अलै. के आगमन की आवश्यकता, आप अलै. के पवित्र जीवन के विभिन्न आयाम बयान किए जाते हैं। युग के अनुसार अपनी नियुक्ति का वर्णन करते हुए हुज़ूर अलै. एक अवसर पर फ़रमाते हैं कि इस ज़माने में ख़ुदा तआला ने बड़ा फ़ज़्ल किया है और अपने दीन अर्थात दीने इस्लाम और हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समर्थन में स्वाभिमान की भावना से एक इंसान को जो तुम में बोल रहा है भेजा, ताकि वह इस रोशनी की ओर लोगों को बुलाए। तुम देखते हो कि हर ओर दाएँ और बाएँ इस्लाम के विनाश की चिंता में समस्त क़ौमें लगी हुई हैं .. यदि अल्लाह तआला का जोश स्वाभिमान के रंग में न होता और وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ (अर्थात हमने इस क़ुर्आन को नाज़िल किया है और हम ही इसकी सुरक्षा करते रहेंगे) उसका वादा न होता तो निश्चय ही समझ लो कि इस्लाम आज दुनिया से उठ जाता तथा इसका नामो निशान तक मिट जाता, किन्तु ऐसा नहीं हो सकता, ख़ुदा तआला का गुप्त हाथ इसकी रक्षा कर रहा है।

आप अलैहिस्सलाम ने अपने दावे के बाद बताया कि किस प्रकार अल्लाह तआला की सहायता एवं समर्थन आप अलै. के साथ है। इस अवसर पर मैं हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. के द्वारा वर्णित कुछ बातें बयान करूँगा जो आपने स्वयं देखी अथवा सुनी हैं। ये घटनाएँ जहां हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई बयान करतो हैं वहाँ हमें अपने सुधार तथा ईमान में मज़बूती की ओर भी ध्यान दिलाते हैं।

नबियों के विरोधियों का सदैव यह तरीक़ा रहा है कि वे नबियों क विषय में यही कहते हैं कि जो भी ज्ञान एवं विवेक की बातें ये बयान करते हैं, कोई दूसरा इन्हें सिखाता है। यहाँ तक कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर भी क़ुर्आन करीम के बारे में नऊज़ुबिल्लाह, यही आपत्ति की गई। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि विरोधी समाचार पत्र यह भी लिखते रहते हैं कि कोई मौलवी चराग़ अली साहब हैद्राबादी थे जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को ये निबन्ध लिख कर भेजा करते थे जो आप बराहीने अहमदिया में प्रकाशित कर देते थे। यह समझ नहीं आता कि मौलवी चराग़ अली साहब को क्या हो गया कि जो अच्छा बिन्दु सुझाई देता है वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को लिख कर भेज देते तथा इधर उधर की व्यर्थ बातें अपने पास रख लेते। पहली बात तो यह है कि उन्हें आवश्यकता ही क्या थी कि वे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को निबन्ध लिख लिख कर भेजते तथा यदि भेजते तो अच्छी चीज़ अपने पास रखते और घटिया चीज़ दूसरे को देते।

विरोधियों के शोर तथा विरोध का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि जब हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने दावा किया उस समय आप अलैहिस्सलाम और आप अलै. के मानने वालों की दशा प्रत्यक्षतः अत्यधिक दुर्बल थी, मौलवी तरह तरह से लोगों को जोश दिलाते थे।

फिर विरोध पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की प्रतिक्रिया क्या होती थी इसके बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से कई बार सुना है कि लोग गालियाँ देते हैं तब भी बुरा लगता है कि ये क्यूँ अपनी आख़िरत बिगाड रहे हैं और यदि गालियाँ न दें तब भी हमें कष्ट होता है क्यूँकि विरोध के बिना जमाअत की उन्नति नहीं होती, गालियाँ देते हैं तो जमाअत का सन्देश पहुंचता है इस विरोध के कारण। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते थे कि- अतः हमें तो गालियों में भी आनन्द आता है इस लिए आपत्तियों तथा लोगों के अपशब्दों की चिंता नहीं करनी चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पंजाबी की एक कहावत बयान करते थे कि ''ऊँट अंगडिन्दे ई लदे जान्दे ने'' अर्थात यद्यपि ऊँट चींख़ता रहता है किन्तु उसका मालिक उस पर हाथ फेर कर सामान लाद ही देता है। हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने यह नसीहत फ़रमाई कि लोग चाहे कुछ कहें तुम प्रेम एवं विनम्रता का व्यवहार करते रहो।

जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दावा किया तो आप अलै. के मानने वाले केवल थोड़े से लोग थे, आथम के साथ आप अलै. का मुक़ाबला हुआ तो लोगों पर एक परीक्षा का समय आ पड़ा। लेखराम से मुक़ाबला हुआ तो हिन्दुओं में आप अलै. के विरुद्ध एक जोश पैदा हो गया। मौलवी मुहम्मद हसन बटालवी के फ़तवों तथा डा.अब्दुल हकीम के अहमदियत से विमुख हो जाने के समय जमाअत पर कठिन परीक्षा आई परन्तु ख़ुदा ने इन सब उपद्रवों को मिटाने के सामान पैदा कर दिए तथा वे फ़ितने बजाए जमाअत को नष्ट करने के इसकी उन्नति एवं सम्मान का कारण बन गए।

विरोध के विषय में एक अन्य सम्बोधन में हज़रत मुस्लेह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया- जब कोई व्यक्ति विरोध की बातें सुनता है तो वह फिर खोज करता है कि अच्छा! ये ऐसे गन्दे लोग हैं, तनिक मैं भी तो जा कर देखूँ। जब वह देखता है तो चकित हो जाता है कि जो बातें मुझे बताई गईं थीं वे तो पूर्णतः और थीं तथा जो बातें ये कहते हैं ये पूर्णतः और हैं तो वह हिदायत को मान लेता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मजलिस में एक बार रामपुर से एक साहब आए और उन्होंने बताया कि मुझे आप अलै. की बैअत के लिए प्रेरणा मौलवी सनाउल्लाह साहब ने दी है। मैंने उनकी किताबों में आप अलै. के विरोध वाली बातें पढ़ीं तथा उनके उद्धरण देखने के लिए आप अलै. की पुस्तकें देखीं तो मुझे पता चला कि रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आदर और सम्मान जो आप अलै. बयान करते हैं वह इन लोगों के दिलों में है ही नहीं।

नबी कठोरता क्यूँ दिखाते हैं? इस बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि नबियों की कठोरता अपनी ज़ात के बारे में नहीं अपितु अल्लाह तआला के स्तर को स्थापित करने के लिए कठोरता तथा स्वाभिमान दिखाते हैं। अपनी ज़ात के लिए तो सम्पूर्ण विनयता होती है। एक बार लाहौर की एक गली में किसी ने आप अलै. को धक्का दिया और आप अलै. गिर गए। हुज़ूर अलै. के साथी जोश में आ गए और सम्भव था कि एक व्यक्ति को मारते किन्तु आप अलै. ने फ़रमाया- उसने अपने जोश एवं सच्चाई के समर्थन में ऐसा किया है।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं कि हमारे ज़माने मं पूरा आदर सम्मान ख़ुदा ने हमारे साथ रख दिया है। अब सम्मान पाने वाले या तो हमारे अनुयायी होंगे अथवा हमारे विरोधी। मौलवी सनाउल्लाह साहब को देख लो वे कोई बड़े मौलवी नहीं, उनके जैसे हज़ारों मौलवी पंजाब और हिन्दुस्तान में पाए जाते है, उनको यदि कोई प्रतिष्ठा मिली हुई है तो हमारे विरोध के कारण मिली है। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि आज भी हम यही देखते हैं कि यदि मौलवियों की रोटी चल रही है अथवा कुर्सी मिली हुई है तो अहमदियत के विरोध के कारण, अब तो राजनीतिज्ञ भी अहमदियत के विरोध से अपनी राजनीति को चमकाने की कोशिश करते हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विरुद्ध षड्यन्त्र भी हुए, हत्या के मुक़दमे भी किए गए, हत्या करने के प्रयास में मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवो हज़रत मसीह मौऊद अलै. के विरुद्ध न्यायालय में गवाही देने के लिए आया। अदालत में मुहम्मद हुसैन बटालवी को मान हानि उठानी पड़ी। ईसाईयों के साथ हुज़ूर अलै. का एक शास्त्रार्थ हुआ जो जंग-ए-मुक़द्दस के नाम से विख्यात है। इसमें ईसाईयों ने लूले लंगड़े, अन्धे और बहरे अनेक लोग अचानक पेश कर दिए और कहा कि हज़रत मसीह नासरी अलै. तो इन्हें अच्छा कर दिया करते थे, आप उनके समरूप होने के दावेदार हैं तो आप भी इन्हें ठीक कीजिए। हुज़ूर अलै. ने बिन किसी घबराहट या व्याकुलता के फ़रमाया कि इस्लाम की शिक्षा के अनुसार वे इस प्रकार के अन्धों और बहरों को ठीक नहीं किया करते थे, मैं वे चमत्कार दिखा सकता हूँ जो हमारे आक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दिखाए, बाक़ो रहे इस प्रकार के चमत्कार, सो वह आपकी किताब ने बता दिया है कि हर वह ईसाई जिसमें राई के दाने के बराबर भी ईमान हो, वैसे ही चमत्कार दिखा सकता है जैसे हज़रत मसीह नासरी ने दिखाए। अब ये अन्धे, बहरे, लंगड़े, लूले मौजूद ह यदि आप में राई के दाने के

बराबर भी ईमान है तो इन्हें अच्छा कीजिए। फ़रमाया- अल्लाह तआला अपने नेक बन्दों को प्रत्येक अवसर पर सम्मान देता है तथा उनको ऐसे ऐसे जवाब समझाता है जिसके परिणाम स्वरूप दुश्मन बिल्कुल हक्का बक्का रह जाता है।

एक व्यक्ति हुज़ूर अलै. के पास आया तथा स्वयं को आप अलै. का प्रशंसक बताया तथा मौलवियों से विभिन्न आस्थाएँ मनवाने के लिए अपने तौर पर विभिन्न सुझाव देने लगा। हुज़ूर अलै. ने उसकी बातें सुन कर फ़रमाया कि यदि मेरा दावा इंसानी चाल होता तो मैं निःसन्देह ऐसा ही करता, परन्तु यह ख़ुदा के आदेशानुसार था, ख़ुदा ने जिस तरह समझाया मैंने उसी तरह किया।

हुज़ूर-ए-अनवर ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई और ख़ुदा तआला की ओर से आई हुई सहायता एवं समर्थन की कुछ अन्य ईमान वर्धक घटनाएँ बयान करने के बाद हुज़ूर अलै. का एक उद्धरण पेश फ़रमाया। आप अलै. फ़रमाते हैं कि झूठे के विनाश के लिए उसका झूठ ही पर्याप्त है किन्तु जो काम अल्लाह तआला जलाल तथा उसके रसूल की बरकतों को प्रकट करने के लिए प्रमाण के रूप में हो तथा स्वयं अल्लाह तआला के हाथ का लगाया गया पौधा हो उसकी रक्षा स्वयं फ़रिश्ते करते हैं। याद रखो, मेरा सिलसिला यदि केवल दुकानदारी है जैसा कि ये लोग कहते हैं तो इसका नामो निशान मिट जाएगा परन्तु यदि ख़ुदा की ओर से है और निश्चित ही उसी की ओर है, तो चाहे पूरी दुनिया इसका विरोध करे, यह बढ़ेगा और फैलेगा और फ़रिश्ते इसकी रक्षा करेंगे। अतः अल्लाह तआला इसका हमें सामर्थ्य प्रदान करे कि हम आप अलै. की बैअत का हक़ अदा करने वाले भी बनें तथा आपके सन्देश को दुनिया में पहुंचा कर अल्लाह तआला के फ़ज़्लों तथा इनामों के वारिस भी बनें, अवज्ञा करने वाले न हों अपितु आज्ञाकारी लोगों में गणना हो हमारी, अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ दे।

ख़ुत्बः के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने कुर्दी भाषा की वैब साईट ahmadiyya-islam.org/krd के संचालन की घोषणा फ़रमाई। इस वैब साईट के माध्यम से कुर्दिश भाषी लोग पहली बार अहमदिया जमाअत की आस्थाओं को अपनी भाषा में पढ़ सकेंगे।

अंत में हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि दुनिया के हालात के बारे में दुआएँ जारी रखें, अल्लाह तआला दुनिया को विनाश से बचाए तथा इंसानों को बुद्धि दे तथा ये अपने पैदा करने वाले को पहचानने वाले हों।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ
اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ
مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ
وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652
टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131